



kanwhizztimes

@kanwhizztimes  
lucknow

@kanwhizztimes

www.kanwhizztimes.com

# केनविज टाइम्स

सिर्फ सच

वर्ष-13 अंक-55 शुक्रवार, 22 मार्च 2024 नगर संस्करण लखनऊ से प्रकाशित एवं दिल्ली, पंजाब और उत्तराखण्ड में प्रसारित मूल्य- ₹ 3.00 पृष्ठ- 12

कांग्रेस का दिग्वियापन आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक है: नड़ा

11

उत्तराखण्ड में नौसम ने ओढ़ी बादलों की चादर, फिजाओं में घुली ठंडक 12

युद्ध के लिए सदैव तैयार रहना शांति के लिए सबसे सुझित मार्ग है और भारत का उदय वैश्विक शांति और सद्भाव के लिए एक आशासन है। जगतीय बनखड़ा

## सुप्रीम कोर्ट का चुनाव आयुक्त की नियुक्ति पर रोक से इनकार

रोक लगाने से अराजकता और अनिश्चितता पैदा होगी, याचिका खारिज



न्यायमूर्ति संजीव खना और न्यायमूर्ति दीपंकर दत्त की पीठ ने याचिका खारिज करते हुए कहा, हम अब कानून पर रोक नहीं लगा सकते हैं। रोक लाना से केवल अराजकता और अनिश्चितता पैदा होगी।

पीठ ने हालांकि, कहा कि चयन समिति के

सदस्यों को विचार-विमर्श के लिए अधिक

समय दिया जाए सकता था। सेवानिवृत्त

आईएएस अधिकारी जानेस कुमार और

सुखीबर सिंह संधु को चुनाव

असहित के रूप में नियुक्त किया गया था।

इससे संबंधित मामले की सुनवाई होनी थी।

पीठ ने आगाह करते हुए कहा, ऐसी

संवैधानिक नियुक्तियों से साक्षात् रहना होगा। विषय के नेता को बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि जब मामला

अदालत में विचाराधीन है तो सरकार चरन संबंधी थीक को एक या दो दिन के लिए

टाल सकती थी। रोक नहीं दिया गया।

पीठ ने एक दिन पहले शीर्ष अदालत में

इससे संबंधित मामले की सुनवाई होनी थी।

पीठ ने आगाह करते हुए कहा, ऐसी

संवैधानिक नियुक्तियों से साक्षात् रहना होगा। विषय के नेता को बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय के

समक्ष विचाराधीन है। अदालत कई महत्वपूर्ण सवालों पर विचार

कर रही है। पीठ ने हालांकि, कहा, "हमारा मानना है कि उच्च न्यायालय के समक्ष अनेक वाले प्रश्न संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ए) के मूल प्रश्नों से निपटते हैं। उच्च न्यायालय द्वारा नियम लंबित होने के कारण, हम गुण-दोष के आधार पर नियम लेने से बच रहे हैं। हमारा विचार है कि अंतरिम राहत के अवेदन की अस्तीकृति के बाद 20 मार्च, 2024 की अधिसूचना पर रोक लगाने की जरूरत है। शीर्ष अदालत ने बताया कि नियम 3(1)(बी)(5) की वैधता को दी गई चुनौती में गंभीर संवैधानिक प्रश्न शामिल है और मुक्त भाषण और अधिकारित पर दिया। पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय द्वारा विशेषण करने की असक्षमता होगी। अदालत कई महत्वपूर्ण सवालों पर विचार

भारतीय स्टेट बैंक ने चुनावी बांड का ब्योरा बंद लिफाफों में चुनाव आयोग को सौंपा

नवी दिल्ली। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने उच्चतम न्यायालय के आदेश का अनुपालन करते हुए चुनावी बांडों को खरीदने और भुगतान वाले दलों के पूरे विवरण दो मुद्र बंद लिफाफों में निर्वाचन आयोग को सौंप दिये हैं। एसबीआई के अध्यक्ष दिवेश कुमार खारा की ओर से उच्चतम न्यायालय में गुरुवार को दिखिल एक शपथपत्र में इस बात की जानकारी दी गयी। शपथपत्र के अनुसार एसबीआई अध्यक्ष ने हल्फानमें चुनावालय को बताया है कि उन्हें चुनावी बांड से संपूर्ण विवरण चुनाव आयोग को दे दिये हैं। इस विवरण में बांड खरीदने वाले के नाम, निर्माम करने वाली शाखा का कोड, मियाद पूरी होने के बांड नंबर, नंबर से पहले दो अक्षर, उसकी रकम और स्थिति के साथ ही बांडों को भुगतान वाले के नाम, उनके खातों के अंतिम चार अंक, बांड का नंबर और उसका सर्वोच्च अंक दिखाया गया है। बांड नंबर अल्प अंतरा द्वारा लगाने की ओर से अंतरिम राहत के एक उपब्रह्म निर्देशक ने बुधवार, 20 मार्च को मुख्य निर्वाचन आयुक्त को पत्र भेज उच्चतम ● शेष पेज 11 पर

### 'फैट चेक यूनिट' पर केंद्र सरकार की अधिसूचना पर रोक

नवी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने भाषण और अधिकारित की स्वतंत्रता पर प्रभाव का विशेषण करने को अनावश्यक बताते हुए

'फैट चेक यूनिट' से संबंधित केंद्र सरकार की 20 मार्च 2024 की अधिसूचना पर आयोग

की अधिसूचना पर रोक लगाया गया।

मुख्य न्यायालय डी वाई चंद्रचुड़, न्यायमूर्ति जे बी पारवीनाला

और न्यायमूर्ति मनोज मिश्र की पीठ ने स्टैंड अप को मेंडियन

कुणाल कमारान और एप्टिंटर्स गिल्ड की याचिका पर सुनवाई

करते हुए केंद्र सरकार के इलेक्ट्रोनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी

मन्त्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के संचालन को निलंबित कर दिया।

पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय के

प्रधानमंत्री को देखने के लिए एक दिन के लिए

उम्मीदवारों के बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय के

प्रधानमंत्री को देखने के लिए एक दिन के लिए

उम्मीदवारों के बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय के

प्रधानमंत्री को देखने के लिए एक दिन के लिए

उम्मीदवारों के बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय के

प्रधानमंत्री को देखने के लिए एक दिन के लिए

उम्मीदवारों के बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय के

प्रधानमंत्री को देखने के लिए एक दिन के लिए

उम्मीदवारों के बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि इससे संबंधित मामला उच्च न्यायालय के

प्रधानमंत्री को देखने के लिए एक दिन के लिए

उम्मीदवारों के बैटक से पहले

उम्मीदवारों पर विचार करने के लिए कोई

समय नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि

कुछ ही घंटों में 200 नामों पर विचार

किया गया। पीठ ने कहा कि इससे संबं













**संयुक्त प्रतिपक्ष की  
तरखीर और पैगाम**

जिसके बारे में सत्ता पक्ष यानी भारतीय जनता पार्टी और उसके समर्थक यह उम्मीद लगाये बैठे थे कि उसे (भाजपा को) चुनौती देने वाली कोई ताकत खड़ी हो ही नहीं सकती। पिछले लगभग डेढ़ वर्षों के प्रयासों के बाद देश के सियासी परिदृश्य में एक ऐसा मजबूत प्रतिपक्ष अंततरु खड़ा नजर आ रहा है जो अपने बुलन्द हौसलों एवं जनहित से जुड़े मुद्दों के साथ मतदाताओं के समक्ष उपस्थित है, कि जिसे देखकर कहा जा सकता है कि हाँ, यह भाजपा का विकल्प है और दो दर्जन से ज्यादा दमदार सियासी दलों में ही कई ऐसे नाम हैं जो नरेन्द्र मोदी के स्थान पर चुने जा सकते हैं। कंग्रेसी नेता राहुल गांधी की 6300 किलोमीटर दूरी की भारत जोड़े न्याय यात्रा के समाप्त अवसर पर मुंबई के शिवाजी पार्क में आयोजित इंडिया गढ़बन्धन की विशाल सभा में ऐसे विषय की तस्वीर उभरी है जो भाजपा से लोकसभा चुनाव में दो-दो हाथ करने को तैयार है, जिसकी घोषणा इसी शनिवार को हुई थी। पक्षपात्रपूर्ण तरीके से बनाये गये चुनावी कार्यक्रम, ईवीएम के अनुसुलझे सवाल, केन्द्रीय जांच एजेंसियों की विशेषी दल के नेताओं पर छोपेमारी, समर्थक मीडिया, प्रचार में माहिर आईटी सेल, संसाधनों की कमी जैसे तमाम अवरोधों की चिंता किये बिना एक ऐसा एकजुट विषय समाने आया है जो भयमुक्त है। यही इसकी ताकत है। साथ ही, कंग्रेस के नेतृत्व में उसने राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक न्याय का जो विमर्श रखा है, वही उसका संदेश है। दो दर्जन से अधिक राजनीतिक संगठनों से बने संयुक्त प्रतिपक्ष की जो ताकत है उसमें देश के 60 प्रतिशत मतदाताओं का समावेश है। देखना यह होगा कि क्या कार्यकर्ताओं व समर्थकों की सामूहिक ताकत इस संदेश को लोगों तक सफलतापूर्वक पहुंच सकेगी और उसे बोटों में तब्दील कर सकेगी। 18वीं लोकसभा में बैठने की व्यवस्था कैसी होगी— यह सारा कुछ इसी प्रयत्न पर निर्भर करेगा। मुंबई की रैली न केवल संयुक्त विषय का आभास देती है वरन् वह पूरे देश का प्रतिनिधित्व करने वाला मंच भी दिखलाई देता है। इसका विस्तार धूर उत्तर के जम्मू-कश्मीर से लेकर दक्षिण भारत के अंतिम छोर यानी तमिलनाडु तक और पूर्वी राज्य बिहार व झारखंड से लेकर पश्चिम के महाराष्ट्र तक का है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी घायल होने के कारण अनुपस्थित थीं तो वहीं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव बीमार होने के कारण नहीं आये दिल्ली व पंजाब में सत्तारुद्ध आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के झंझटों में फंसे हैं इसलिये नहीं आये लेकिन उनके प्रतिनिधि के रूप में संरेख भारद्वाज मौजूद थे जो खुद भी एक वरिष्ठ नेता हैं। कई दल वैसे अपने गज़ों में परस्पर विरोधी हैं लेकिन वे अपने विवादों को किनारे रखकर इसमें शामिल हुए थे। नेशनल कंफ्रेंस के फारुख अब्दुल्ला एवं पीड़ीपी की महबूबा मुफ्ती चाहे अपने राज्य कश्मीर में परस्पर विरोधी हों पर यहां वे साथ बैठे नजर आये। जिस गढ़बन्धन के बारे में प्रचारित किया जाता रहा कि वह साथ नहीं चल सकता, उसने वे सारी भ्रांतियां खत्म कर दीं। विभिन्न नेताओं के विद्ये भाषणों में यह बात उभरकर आई कि वे सभी तीसरी बार मोदी के चुनकर आने और भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने के बाद उत्पन्न होने वाले खतरों से पूर्णतः वाकिफ हैं। लोकतंत्र एवं संविधान पर मंडराते बड़े खतरे को सभी महसूस करते दिखाई दिये। भाजपा के अबकी बार 400 पार के नारे के पीछे की मंशा को भी वे जान चुके हैं। देश भर में इस मंच के माध्यम से संदेश गया है कि भाजपा संविधान को बदलकर मनुस्मृति का शासन लाना चाहती है। कंग्रेस अध्यक्ष मलिलकार्जुन खरणे ने भी लोगों को इस खतरे के प्रति आगाह किया कि दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों को किस प्रकार से संविधान के खत्म होने से नुकसान होगा।

# चुनावी समरः अर्थ का अनर्थ कर जनसमझाओं से ध्यान भटकाने का 'फुटिल प्रयास'

के नेताओं ने एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप शुरू कर दिये हैं। राजनीति के स्वयंभू 'चाणक्यों' द्वारा बड़ी ही चतुराई से मतदाताओं को ध्यान वास्तविक मुद्दों से भटका कर गैर ज़रूरी मुद्दों की तरफ खींचा जा रहा है। विश्लेषकों का मानना है कि इस बार होने जा रहे 18 वीं लोकसभा के आम चुनाव संभवतः पूर्व में अब तक हुये सभी चुनावों की तुलना में कुछ ज्यादा ही कटु वातावरण में होने की संभावना है। इसके लक्षण भी अभी से दिखाई भी देने लगे हैं। देश के समक्ष इस समय ताजातरीन मुद्दा इलेक्टोरल बांड सम्पन्नी घोटाले का है। मंहगाई इसके समय अभूतपूर्व रूप में अपने चरम पर है। विपक्षी दल वर्तमान केंद्र सरकार को चंद गिने चुने उद्योगपतियों के हितों का संरक्षण करने तथा किसानों, मजदूरों, कामगारों व गरीबों के विरुद्ध काम करने वाली सरकार बता रहे हैं। सत्ता पर कई प्रमुख केंद्रीय जांच एजेन्सीज के दुरुपयोग का आरोप है। विपक्षी दल अग्निवीर योजना का विरोध कर इसे सैनिकों के जोश व उत्साह को खत्म करने वाली देश विरोधी योजना बता रहे हैं। विपक्षी दल पुरानी पेंशन योजना लागू करने की मांग भी कर रहे हैं जिसे बेरोजगारी देश की ज्वलतं समस्या है। परन्तु इन ज़रूरी विषयों से इतना बड़ी ही चतुराई से चुनाव का रुख 'धर्म' की तरफ मोड़ा जा रहा है। पिछले दिनों इण्डिया गठबंधन दलों की एक विशाल सभा जो कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा की समापन सभा के रूप में मुंबई के शिवाजी पार्क में आयोजित की गयी थी इस सभा में राहुल गांधी ने कहा था कि 'हिन्दू धर्म में शक्ति शब्द होता है। हम एक शक्ति से लड़ रहे हैं। अब सवाल उठता है कि वह शक्ति क्या है? बस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को राहुल गांधी द्वारा प्रयुक्त 'शक्ति' 'शब्द' इतना 'अनुकूल' लगा कि वे अपनी विरोध शैली के अनुसार इसी 'शक्ति शब्द' को लेकर 'उड़ पड़े।' मुंबई की इस सभा के आगे ही दिन प्रधानमंत्री ने तेलंगाना के जगतियाल में एक जनसभा को संबोधित करते हुये कहा कि - 'मुंबई में इंडी गठबंधन की पहली रैली हुई और उन्होंने अपना धोषणा पत्र जारी किया। वह कहते हैं कि उनकी लडाई 'शक्ति' के खिलाफ़ है। मेरे लिए हर बेटी शक्ति का रूप है और मैं अपनी माताओं-बहनों की रक्षा के लिए जान की बाज़ी लगा दूंगा, जीवन खण्ड दूंगा।' उन्होंने कहा कि 'एक और शक्ति के विनाश की बात करने वाले लोग हैं, दूसरी और शक्ति की पूजा करने वाले लोग हैं। मुकाबला 4 जून को हो जाएगा कि कौन शक्ति का विनाश कर सकता है और कौन शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है। इंडी गठबंधन ने अपने धोषणापत्र में कहा कि उनकी लडाई शक्ति के खिलाफ़ है। मेरे लिए हर मां, बेटी और बहन 'शक्ति' का रूप हैं। मैं उनकी पूजा करता हूं। मैं

पिटल पिंगा इन्हें पाप वाला का एक पिराल सना जा कि नारा जाड़ा पाप वाला का सनापन सभा के रूप में मुंबई के शिवाजी पार्क में आयोजित की गयी थी इस सभा में राहुल गांधी ने कहा था कि “हिन्दू धर्म में शक्ति शब्द होता है। हम एक शक्ति से लड़ रहे हैं। अब सवाल उठता है कि वह शक्ति क्या है ? बस प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को राहुल गांधी द्वारा प्रयुक्त ‘शक्ति’ ‘शब्द’ इतना ‘अनुकूल’ लगा कि वे अपनी विशेष शैली के अनुसार इसी ‘शक्ति शब्द’ को लेकर ‘उड़ पड़े’। मुंबई की इस सभा के अगले ही दिन प्रधानमंत्री ने तेलंगाना के जगतियाल में एक जनसभा को संबोधित करते हुये कहा कि - ‘‘मुंबई में इंडी गठबंधन की पहली रैली हुई और उन्होंने अपना घोषणा पत्र जारी किया। वह कहते हैं कि उनकी लड़ाई ‘शक्ति’ के खिलाफ़ है। मेरे लिए हर बेटी शक्ति का रूप है और मैं अपनी माताओं-बहनों की रक्षा के लिए जान की बाजी लगा दूंगा, जीवन खपा दूंगा।’’ उन्होंने कहा कि ‘एक ओर शक्ति के विनाश की बात करने वाले लोग हैं, दूसरी ओर शक्ति की पूजा करने वाले लोग हैं। मुक्काबला 4 जून को हो जाएगा कि कौन शक्ति का विनाश कर सकता है और कौन शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है। इंडी गठबंधन ने अपने घोषणापत्र में कहा कि उनकी लड़ाई शक्ति के खिलाफ़ है। मेरे लिए हर मां, बेटी और बहन ‘शक्ति’ का रूप हैं। मैं उनकी पूजा करता हूं। मैं विपक्ष की चुनौती को स्वीकार करता हूं।’’ तेलंगाना में ही एक अन्य सभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि “‘इंडी गठबंधन वाले बार-बार, जानबूझकर हिन्दू धर्म का अपमान करते हैं। हिन्दू धर्म के खिलाफ़ इनका हर बयान बहुत सोचा समझा हुआ होता है। डीएमके और कांग्रेस का इंडी गठबंधन और किसी धर्म का अपमान नहीं करता। किसी और धर्म के खिलाफ़ इनकी जुबान से एक शब्द नहीं निकलता, लेकिन हिन्दू धर्म को गाली देने में ये एक सेंकड़ नहीं लगाते। गौरतलब है कि ‘कांग्रेस स्पष्ट कर चुकी है कि राहुल गांधी द्वारा ‘शक्ति शब्द’ का अर्थ ‘दुष्कृतियों’ से था न कि दुर्गा या शिव शक्ति से। लेकिन बीजेपी द्वारा फैला रही है।

'प्रवचन' ने मोदी पर ही कई सवाल खड़े कर दिये हैं। पहला सवाल तो यह कि जब प्रधानमंत्री के अनुसार उनके लिए देश की 'हर बेटी' शक्ति का रूप है और वे अपनी इन बेटियों-माताओं व बहनों की रक्षा के लिए जान की बाज़ी लगाने व अपना जीवन खपाने की बात करते हैं तो क्या मणिपुर में निःवस्त्र घुमाई जाने वाली बेटियां 'शक्ति का रूप' नहीं थीं? जिन बेटियों के साथ वहाँ बलात्कार की अनेक घटनाएं हुईं उन बहनों की रक्षा के लिए क्या प्रधानमंत्री ने अपनी जान की बाज़ी लगाई? हाथरस से लेकर कटुआ तक और जंतर मंतर पर बैठी ओलिम्पिक स्तर का पदक जीतने वाली कई पहलवान लड़कियां क्या 'शक्ति' का रूप नहीं थीं? क्या किया मोदी जी ने उनकी रक्षा के लिये? सत्ता के कई क्रीड़ी लोगों पर से तो मोदी सरकार के ही कार्यकाल में बलात्कार सम्बन्धी कई मुकदमें तक वापस ले लिए गये? उस समय 'शक्ति' का रूप और बहनों की रक्षा के लिए जान की बाज़ी लगाने व अपना जीवन खपाने जैसे डायलॉग याद नहीं आये थे? या मतदाताओं को गुमराह करने व उनमें भ्रम पैदा करने वाली ध्यान भटकाने की यह 'पुड़िया' चुनाव के समय ही खोली जाती उससे असहमति भी जata चुकी है। परन्तु भाजपा ने बिहार में गया कसीट राजग के जिस उम्मीदवार के लिये छोड़ी है वे हैं बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा के अध्यक्ष जीतन राम मांझी। जीतन राम मांझी अनेक अवसर पर हिन्दू धर्म व हिन्दू देवी देवताओं का अपमान कर चुके हैं। वे न केवल राम को भगवान मानने से इनकार कर चुके हैं बल्कि सत्यनारायण पूजा व हिन्दू धर्म पर भी सवाल खड़े कर चुके हैं। यहाँ तक कि वे ब्राह्मणों के प्रति भी अपशब्द बोल चुके हैं। मांझी या भी कहा था कि वे पूजा-पाठ कभी नहीं करते। परन्तु जीतन राम मांझी का पार्टी वर्तमान निरीश सरकार में भी साझीदार है और मांझी स्वयं एन डी ए के लोकसभा प्रत्याशी भी हैं। क्या मांझी का हिन्दू धर्म व देवी देवताओं का विरोध मोदी या भाजपा अथवा हिन्दू धर्म के उन स्वर्यंभू शुभर्भितक को दिखाई नहीं देता? दरअसल यह सब चुनावी समर के दौरान इसी तरह अर्थ का अनर्थ करने व जनसमस्याओं से जनता का ध्यान भटकाने का कुटिल प्रयास मात्र है। जिससे जनता को समझने व इससे सचेत रहने का ज़रूरत है। - निर्मल राणी

लो कसभा चुनाव 2024 की रणभेरी बज चुकी है, सभी राजनीतिक दलों ने अपनी रणनीतियों को अंतिम रूप देना प्रारम्भ कर दिया है। नेता दिया था कि मंदिरों की मूर्तियों में कोई प्राण नहीं होते व निर्जीव होती हैं और एक बार तो उन्होंने यहां तक कह दिया कि लोग मंदिरों में लड़कियां छेड़ने के लिए जाते हैं। इसी तरह लोगों ने अपनी रणनीतियों को अंतिम रूप देना प्रारम्भ कर दिया है।

मतदाता आ का रस्खान के लिए गमागम बयानबाज़ी कर रहे हैं। एक ओर प्रधानमंत्री ने देंग मोदी की गारंटीयों और अबकी बार 400 पार के नारे के साथ एनडीए गठबंधन ने मनोवैज्ञानिक बढ़त बना ली है तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस के नेतृत्व में इंडी

मा का शक्ति के रूप में अत समाज का मानना है कि गीत बद्धि की कहावत को च

बढ़त बना ली है तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस के नेतृत्व में इंडी गठबंधन भी मैदान में उतर चुका है। इंडी गठबंधन जैसे ही ताकत लगाकर खड़ा होता है वैसे ही उसके नेता राहुल गांधी ही उसकी टांग खींचने वाला काम कर देते हैं। मुंबई में राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा पार्ट -2 का समापन हुआ जिसमें कई महत्वपूर्ण नेता शामिल हुए लेकिन समापन कार्यक्रम में राहुल के अति उत्साह से भेरे बयान ने कांग्रेस और इंडी गठबंधन को एक बार फिर बैकफुट पर धकेल दिया। राहुल जी ने अपनी न्याय यात्रा के समापन अवसर पर मुंबई के शिवाजी पार्क में आयोजित महारौली में एक बयान दिया। इस भाषण में उन्होंने कहा कि वो न बीजेपी के खिलाफ लड़ रहे हैं और न ही मोदी के खिलाफ। हिंदू धर्म में एक शब्द बोला जाता है और वह है शक्ति, हम उसी शक्ति से लड़ रहे हैं। स्वाभाविक रूप से राहुल गांधी के इस बयान से इंडी गठबंधन असहज हो गया क्योंकि हिंदू धर्म में शक्ति शब्द का प्रयोग मां दुर्गा के लिए हुआ है और यह एक बहुत पवित्र शब्द माना गया है जिसे नारी सम्मान के साथ भी जोड़ा जाता है। हिंदू धर्म को मानने वाला है। राहुल गांधी पूर्व में भी सनातन हिंदू धर्म को अपमानित करते रहे हैं किन्तु इस समय चुनाव सिर पर है और भाजपा ने इस मुद्दे को लपक लिया है। राहुल गांधी आज शक्ति स्वरूपा मां दुर्गा और उनकी शक्ति के विनाश की बात कर रहे हैं। राहुल के इस भाषण के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने हर सार्वजनिक कार्यक्रम में इसकी चर्चा कर रहे हैं और तीखा उत्तर दे रहे हैं। स्वयं को जनेऊ धारी दत्तात्रेय गोत्रीय ब्राह्मण कहने वाले राहुल गांधी को दुर्गा सप्तशती का कम से कम एक शलोक तो समझना चाहिए था जो कहता है - या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।। सनातन को लेकर की गई यह राहुल की पहली गलती नहीं है इससे पूर्व वह अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर की आलोचना कर चुके हैं, उन्होंने प्रभु राम की प्राण प्रतिष्ठा पर भी सवाल उठाए थे और रैलियों में कहा था कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के समय केवल बड़े लोग आए और उसमें कोई गरीब नहीं दिखाई दिया। राहुल सहित कांग्रेस ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का बहिष्कार किया। इसी तरह राहुल गांधी ने एक बार बयान

व जासस का हा एकमत्र गाड़ भा बता चुक ह। सम्पूर्ण विषय  
इस बात को अच्छी तरह समझता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी  
किस तरह विषय के बड़े से बड़े हमले को अपने पक्ष में  
राजनैतिक हथियार के रूप में सफलतापूर्वक प्रयोग कर लेते हैं।  
नीच चायवाला और चौकीदार चोर हैं' का हाल वो पिछले  
चुनावों में देख चुका है। हाल ही में लालू यादव के एक बयान  
के बाद उन्होंने मैं हूं मोदी परिवार का नारा दे दिया। अब तो  
राहुल गांधी ने सीधे सनातन की शक्ति पर हमला बोल दिया है  
तो विषय का असहज होना स्वाभाविक है। कांग्रेस, प्रियंका,  
राहुल सहित उनके अपने प्रवक्ता और कुछ यूट्यूबर सफाई दे  
रहे हैं किन्तु इस मुद्दे पर राहुल का बचाव कर पाना किसी के  
बस की बात नहीं रह गई है। निर्जल नवरात्र करने वाले  
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राहुल को उत्तर देते हुए कहा तेलंगाना  
की जनसभा में कहा क , गठबंधन ने अपना घोषणपत्र शक्ति  
को समाप्त करने के लिए जारी किया है। मैं इस चुनौती को  
स्वीकार करता हूं और मैं इस शक्ति स्वरूपा मात्राओं बहनों की  
रक्षा के लिए जान की बाजी लगा दूंगा, जीवन खपा दूंगा। क्या  
भारत की धरती पर कोई शक्ति के विनाश की बात कर सकता  
है क्या? राहुल गांधी के बयान पर भारत की नारी शक्ति सहित  
प्रत्येक हिन्दू में आक्रोश है।

## नाम का पार

**अ** बहद लाकप्रय व महत्वपूर्ण औषधीय जड़ीबूटी है, जिसे लगभग पिछले 5000 सालों से उच्चार के दौरान कुछ पातया लकर उस पानी में उबाला। अब इस पानी को ठंडा होने वें। अपने बालों को शैम्पू से धोने के बाद इस पानी से साफ़ करें। अग

इसका अन्यान्य जीवन का रहा है। इसका उपयोग कुछ लकड़ी के बीज, जड़ों और छाल में भी औषधीय गुण पाए जाते हैं। नीम सेहत और सौंदर्य दोनों के लिए ही गुणकारी है। नीम के पत्तों में एंटी?बैकटीरियल गुण होते हैं यही वजह है कि यह संक्रमण, जलन और त्वचा की किसी भी तरह की समस्याओं पर यह जादू की तरह काम करता है। यह बैकटीरिया को नष्ट करता है, प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करता है और तेजी से चिकित्सा को प्रोत्साहित करता है। इसके अलावा इसमें एंटी?एरिंग गुण भी पाए जाते हैं। इतना ही नहीं, नीम में विटामिन और फैटी एसिड त्वचा की लोच में सुधार करते हैं और झूरियों और महीन रेखाओं को कम करते हैं। नीम के पत्ते घाव को बेहद जल्द ठीक करते हैं। बस आप इसकी पत्तियों का पेस्ट बनाएं और घाव या कीड़े के काटने पर प्रभावित स्थान पर लगाएं।

जानकारी का जलन के लिए इसका उपयोग कुछ पत्तियों को उबालें, पानी को पूरी तरह से ठंडा होने वें और फिर अपनी आंखों को धोने के लिए इसका इस्तेमाल करें। यह आंखों में किसी भी तरह की जलन, थकान या लालिमा में मदद करेगा। कान के जुड़ी समस्याओं को भी नीम आसानी से ठीक कर सकता है। बस आप नीम के कुछ पत्तों को मसलकर उसमें थोड़ा शहद मिलाएं और फिसी भी कान के फोड़े का इलाज करने के लिए इस मिश्रण की कुछ बूंदों का उपयोग करें। नीम के पत्ते त्वचा के लिए बेहद चमत्कारी माने जाते हैं। इसके लिए नीम के पत्तों के पेस्ट के साथ हल्दी मिलाएं। इसका उपयोग खुजली, एक्जिमा, रिंग कीड़े और कुछ हल्के त्वचा रोगों के लिए भी किया जा सकता है। कुछ नीम के पत्तों को क्रश करें और अपनी इम्युनिटी बढ़ाने के लिए उन्हें एक गिलास पानी के साथ लें।

शिव का पर्दा

**भ** न्याय का पारदर्शक बहुत जड़ा बहाना दृढ़ा जा देता  
का अंत दिखता है। एकादश रुद्र, रुद्रगणियाँ, चौसंठ योगिनियाँ,  
षोडश मातृकाएँ, भैरव आदि इनके सहचर और सहचरी हैं।  
माता पार्वती की सखियों में विजया आदि प्रसिद्ध हैं। गणपति प्रवाराम  
उत्तरी पर्वी मिहित वृद्धि दूषा आदि दूषों से प्राप्त हैं। उत्तरका वाहन

मूषक है। कार्तिकेय की पत्नी देवसेना तथा वाहन मयूर है। भगवती पार्वती का वाहन सिंह है और स्वयं भगवान शंकर धर्मार्थतार नन्दी पर आरुढ़ होते हैं। स्कन्दपुराण के अनुसार यह प्रसिद्ध है कि एक बार भगवान धर्म की इच्छा हुई कि मैं देवधिदेव भगवान शंकर का वाहन बनूँ। इसके लिए उन्होंने वीथकाल तक तपस्या की। अंत में भगवान शंकर ने उन पर अनुग्रह किया और उन्हें अपने वाहन के रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार भगवान धर्म ही नन्दी वृशभ के रूप में सदा के लिए भगवान शिव के वाहन बन गये। बाण, रावण, चण्डी, भृंगी आदि शिव के मुख्य पार्षद हैं। इनके द्वारा रक्षक के रूप में कीर्तिमुख प्रसिद्ध हैं, इनकी पूजा के बाद ही शिव मंदिर में प्रवेश करके शिव पूजा का विधान है। इससे भगवान शंकर परम प्रसन्न होते हैं। यद्यपि भगवान शंकर सर्वत्र व्याप्त हैं तथापि काशी और कैलास इनके मुख्य स्थान हैं। भक्तों के हृदय में तो ये सर्वदा निवास करते हैं। इनके मुख्य आयुध त्रिशूल, टंक, कृपाण, वज्र, अग्नियुक्त कपाल, सर्प, घंटा, अंकुश, पाश तथा पिनाक धनुष हैं। भगवान शंकर के नमिन लहरे ही उदान पर्वत अमृकामार्गा हैं।



**अ**धिकतर लोगों की चाहत होती है कि जब भी सुबह उनकी आँखें खुले तो सामने चमकता हिमालय और लाली खिखेरता सरज दिखाई क्या-क्या धूम सकते हैं। मुनस्यारी जाने व प्लान आप कम से कम 6 दिनों का तो जरूर बनाएं तभी आप मुनस्यारी के मनमोहक दृश्य का आनंद उठा सकते हैं। यहां की डाढ़ी

पढ़े ! अपनी इस तमन्ना अगर आप पूरा करना चाहते हैं तो उत्तराखण्ड का खूबसूरत मुनस्यारी आपको अपने पास बला रहा है। हिल स्टेशन तो सारे खूबसूरत होते हैं लेकिन हर हिल स्टेशन की अपनी अलग खूबसूरती और विशेषता होती है। उत्तराखण्ड की चोटी पर बसा मुनस्यारी काफी खूबसूरत है। समुद्र तल से 2300 मीटर की ऊँचाई पर स्थित मुनस्यारी को कुदरत का वरदान प्राप्त है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता, बफली चोटियां, हरे-भरे खूबसूरत जंगल, हिमालय वस्तियां और बन्य जीवन के लिए मुनस्यारी विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। मुनस्यारी की खूबसूरती को देखते हुए इसे उत्तराखण्ड 'मिनी कर्सी' कहा जाता है। अगर आप अपनी छुट्टियां मुनस्यारी में बिताने के बारे में सोच रहे हैं तो हम इस आर्टिकल में हम आपको बताने जा रहे हैं कि आप मुनस्यारी कैसे जा सकते हैं और तबन्ती काफी लंबी है। बिर्थे जल प्रपात उत्तराखण्ड वेपि पथोरागढ़ जिले के मुनस्यारी के पास तेजस्वी से लगभग 14 किमी दूर स्थित है। यह झारखण्ड समुद्र तल से 400 फीट ऊपर से पिराटा नामक जलप्रपात मुनस्यारी से लगभग 3 किमी दूर है और एक छोटे ट्रेक द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। ट्रेकिंग सफर के बीच आप आसपास के प्राकृतिक दृश्यों का आनंद भी ले सकते हैं। बिर्थे वॉर्टरफॉल कि खाड़ी बात है कि यह झारखण्ड की गर्मी या पिछड़ी सर्दी का मौसम हर समय एक जैसा रहता है इसका पानी कभी कम नहीं होता है। अगर आप मुनस्यारी जा रहे हैं वहां पर आप कलामुनी टॉप भी घूम सकते हैं। कलामुनी टॉप घूमने के लिए काफी मशहूर जगह है। सबसे ऊँचाई पर होने के कारण इस जगह वह कल्पाती टॉप कहा जाता है।





# वैक स्थाते सील करना मोदी-शाह की आपराधिक कार्रवाई : कांग्रेस



नयी दिल्ली। कंग्रेस ने लोकसभा चुनाव के बीच पार्टी के बैंक खाते सील करने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा गृहमंत्री अमित शाह की आपराधिक कार्रवाई करार देते हुए गुरुवार को कहा कि इस तरह की कार्रवाई सोची समझी रणनीति का हिस्सा है और इसका मकसद कंग्रेस को आर्थिक रूप से पंगु बनाना है।

कंग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खड्गे, कंग्रेस सांसदीय दल की नेता सोनिया गांधी, कोषाध्यक्ष अजय माकन तथा पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने यहां कंग्रेस मुख्यालय में आयोजित विशेष संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में आज कहा कि उसके खाते सोजी समझी रणनीति के तहत और श्री मोदी तथा श्री शाह की सह पर सील किए गये हैं ताकि कंग्रेस को आर्थिक रूप से पंगु बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि पार्टी के बैंक खाते में 285 करोड़ रुपये जमा हैं लेकिन चुनाव के बक्तव्य उस पैसे का इस्तेमाल खाते सील होने की वजह से नहीं किया जा सकता है। पार्टी के लिए बैनर,

कहा, म सावधानक सस्थाआ स अपाल करता हूँ कि अगर वे स्वतंत्र और निष्पक्ष इलेक्शन चाहते हैं तो हमारी पार्टी को बगैर किसी रोक -टोक के बैंक खातों को इस्तेमाल करने दें। जो आयकर का दावा है वो अंततः कोट्ट के निर्णय के अनुसार सेस्टेल हो जाएगा। राजनीतिक दल टैक्स नहीं देते, भाजपा ने कभी नहीं दिया, इसके बाद भी अगर हमसे यह माँगा जा रहा है, तो हम न्यायालय के अंतिम निर्णय का इंतजार करेंगे। श्रीमती गांधी ने कहा, आज हम जो मुद्दा उठ रहे हैं वह बहुत ही गंभीर है और न केवल कंग्रेस को प्रभावित करता है - बल्कि यह हमारे लोकतंत्र को भी सबसे अधिक प्रभावित करता है। प्रधानमंत्री द्वारा कंग्रेस को आर्थिक रूप से पंगु बनाने का सुनियोजित प्रयास चल रहा है। जनता से एकत्रित धन को रोका जा रहा है और हमारे खातों से जबरन पैसा छीना जा रहा है। हालांकि, इन सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी, हम अपने चुनाव अभियान की प्रभावशीलता को बनाए रखने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा, एक तरफ 'इलेक्टोरल बॉन्ड' का मुद्दा

कांग्रेस का दिवालियापन आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक है: नड़ा  
नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जगत प्रकाश नदडा ने देश में लोकतंत्र खत्म होने के कांग्रेस के बयान पर पलटवार करते हुए कहा है कि कांग्रेस अप्रासंगिक हो गयी है और उसका दिवालियापन आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे, कांग्रेस संसदीय दल की नेता सोनिया गांधी और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने गुरुवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन में सरकार पर कांग्रेस के बैंक खातों को बंद करने का आरोप लगाया और कहा कि देश में लोकतंत्र खत्म हो गया है। श्री नदडा ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया करते हुए कहा कंग्रेस को जनता पूरी तरह से खारिज कर देगी और ऐतिहासिक हार के डर से उनके शीर्ष नेतृत्व ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया और भारतीय लोकतंत्र तथा संस्थानों के खिलाफ बयानबाजी की। वे आसानी से अपनी अप्रासंगिकता का दोष 'वित्तीय परेशानियों' पर मढ़ रहे हैं। दरअसल, उनका दिवालियापन आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक और बौद्धिक है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि अपनी गलतियों को सुधारने के बजाय, कंग्रेस अपनी परेशानियों के लिए अधिकारियों को दोषी ठहरा रही है। उन्होंने कहा कि चाहे वह आयकर अपीलय न्यायाधिकरण हो या दिल्ली उच्च न्यायालय दोनों ने कांग्रेस से नियमों का पालन करने और बकाया करों का भुगतान करने के लिए कहा है लेकिन पार्टी ने कभी ऐसा नहीं किया। उन्होंने कहा जिस पार्टी ने हर क्षेत्र, हर राज्य और इतिहास के हर पल में लूट की हो, उसके लिए वित्तीय लाचारी की बात करना हास्यास्पद है। जीप से लेकर हेलिकॉप्टर घोटाले से लेकर बोफोर्स तक सभी घोटालों से जमा हुए पैसे का इस्तेमाल कंग्रेस अपने चुनाव प्रचार में कर सकती है। श्री नदडा ने कहा, छँग कंग्रेस के पार्ट टाइम नेता कहते हैं कि भारत का लोकतंत्र होना झूठ है - क्या मैं उहें विनम्रतापूर्वक याद दिला सकता हूँ कि 1975 और 1977 के बीच केवल कुछ महीनों के लिए भारत एक लोकतंत्र नहीं था और उस समय भारत की प्रधान मंत्री कोई और नहीं बल्कि श्रीमती इंदिरा गांधी थीं।

श्रीमती गांधींदेवी ने अपने दोनों बच्चों को अपनी जाति के लिए बहुत सारी योग्यता देखी है।

में भी, हम अपने चुनाव अभियान की तरफ से जाएंगे ताकि हमें दिल

पर फायदा हुआ है। दूसरी तरफ प्रमुख वेपक्षी दल, कंग्रेस की वित्तीय स्थिति पर निराकार हमला हो रहा है। यह सचमुच सुनियोजित प्रयास चल रहा है। जनता से एकत्रित धन को रोका जा रहा है और हमारे खातों से जबरन पैसा छीना जा रहा है। अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं। श्री राहुल गांधी ने कहा, हमारे सभी बैंक खाते प्रार्जन कर दिए गए हैं। हम अपना प्रचार कार्य नहीं

# निवापराजा का नहा प्रस्तुति रहे एआई दक्ष कामगार

ज्यादा  
आर्टी

कौशल का प्रायामकता दरह लाकन 79 प्रतिशत नियोक्ताओं को अपनी जरूरत के मुताबिक एआई कौशल वाले लोग नहीं मिल पा रहे हैं जबकि एआई कौशल से काम करने वाले लोगों का वेतन 54 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ सकता है और एआई अपनाने में होती वृद्धि के साथ करियर में तेजी आ सकती है। एमेजॉन डॉटकॉम कंपनी एमेजॉन वेब सर्विसेज (एडब्लूएस) ने आज अपनी नई शोध जारी की है, जिसमें सामने आया है कि जब एआई का पूरा उपयोग होने लगेगा, तब एआई कौशल और विशेषज्ञता वाले लोगों के वेतन में 54 प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि हो सकती है जबकि आईटी (65 प्रतिशत), शोध एवं विकास

जो आम तौर से रिटायरमेंट की योजना बना रहे हैं, उन्होंने कहा कि यदि उन्हें एआई कौशल बढ़ाने वाला कोर्स पेश किया जाएगा, तो वो इसमें दखिला लेंगे। इसमें यह भी पता चला है कि भारत में एआई कौशल रखने वाले कार्यबल द्वारा उत्पादकता में भी काफी वृद्धि हो सकती है। सर्वे में शामिल नियोक्ताओं को आशा है कि एआई द्वारा बार-बार होने वाले कामों के ऑटोमेट हो जाने (71 प्रतिशत), नए कौशल सीखने का प्रोत्साहन मिलने (68 प्रतिशत), वर्कफ्लो और परिणामों में सुधार आने (64 प्रतिशत) से संगठन की उत्पादकता में 68 प्रतिशत तक की वृद्धि हो जाएगी। कर्मचारियों का मानना है कि एआई से उनकी दक्षता में 66 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है।

भाजपा के शीर्ष नेताओं की ओर से कंग्रेस सहित कई दलों पर 'परिवारवाद' को बढ़ावा देने का आरोप लगाने वाली हालिया टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुए श्री अब्दुल्ला ने कहा, मैंने यह पहले भी कहा है। भाजपा को 'परिवारवादी' दलों से कोई दिक्कत नहीं है। उन्हें केवल उन्हीं दलों से दिक्कत है जो उनका विरोध करते हैं। उन्होंने बिहार में चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी और भाजपा के बीच हालिया गठबंधन का जिक्र करते हुए पूछा कि क्या यह गठबंधन 'परिवारवाद' नहीं है? श्री अब्दुल्ला ने कहा, हाल ही में अमित शाह साहब ने राज ठाकरे से मुलाकात की। क्या वह 'परिवारवाद' नहीं है।

# हाइड्रोजन, इंपरियल कॉलेज अंतरराष्ट्रीय साझेदारी की बैठक

और ईंधन सेल के लिये अंतरराष्ट्रीय सामुदायिकी (आईपीएचई) की संचालन समिति की राजधानी में चल रही 41वीं बैठक में हरित हाइड्रोजन को बढ़ावा देने के लिये विजनेस मॉडल, विनियम और बुनियादी ढांचे के बारे विचार-विमर्श किया गया।

भारत की मेजबानी में यह बैठक राजधानी में 18 मार्च से 22 मार्च तक की गयी है। भारत ने सभी हितधारकों से प्राथमिकता के आधार पर अर्थव्यवस्था के सभी संभावित क्षेत्रों में हरित हाइड्रोजन की नैतिकी को गति प्रदान करने के लिए साहसिक उपाय अपनाने का आग्रह किया। सभी और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की गुरुवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार आईपीएचई की संचालन समिति की 42 बुधवार को सुबमा स्वराज भवन में शुरू हुई। इसमें ऑस्ट्रिया, चिली, फ्रांस, यूरोपीय आयोग, जापान, जर्मनी, नीदरलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, इंग्लैंड, अमरीका, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया सहित इस बैठक में भाग लेने वाले देशों के आईपीएचई प्रतिनिधियों ने अनुसंधान और विकास, प्रमुख नीतिगत विकास और उनकी संघीय तथा प्रांतीय सरकारों द्वारा हाइड्रोजन के बारे में की गई पहलों पर अपने देश की नवीनतम स्थिति के बारे में जानकारी दी। विज्ञप्ति के अनुसार प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय स्वच्छ हाइड्रोजन रणनीतियों, हाइड्रोजन उत्पादन, भंडारण और परिवहन से संबंधित अनुसंधान और विकास पहलों, मांग सृजन की स्थिति, बुनियादी ढांचा विकास, आपूर्ति और मांग का पैमाना और हाइड्रोजन के परिवहन, उत्पादन और भंडारण के लिये व्यावसायिक मॉडल, वित्त, नीति, विनियम और सतत वाणिज्यिक एवं आर्थिक मॉडल के क्षेत्रों में अमीरात, सहयोग और भागीदारी की संभावनाओं के बारे में विचार-विमर्श किया। प्रतिनिधियों ने नियामक ढांचे, उत्सर्जन बचत का पता लगाने की पद्धति, समर्पित हाइड्रोजन बुनियादी ढांचा और बाजारों की निर्माण, हाइड्रोजन बैंकों और आयात-निर्यात गलियारे, जन जागरूकता, व्यापार करने में आसानी और उच्च दक्षता एवं कम लागत वाले दृष्टिकोण के बारे में भी इस चर्चा के दौरान विचार-विमर्श किया गया। समिति ने 40वीं संचालन समिति के निर्णयों और कार्यों तथा आईपीएचई की सदस्यता के बारे में भी समीक्षा की।

# क्षु युनाव सामातः अभ्यावप

परिषद

रखया अपनान का आराप लगाया है और कहा है कि छात्र संघ चुनाव के प्रेसिडेंशियल डिबेट के दौरान गुरुवार की सुबह चुनाव अभाविप की ओर से अध्यक्ष पद के प्रत्याशी उमेश चंद्र अजमीरा के साथ दुर्व्यवहार करना तथा भाषण देने से रोकने के कृत्य को पूरी तरह से पक्षपाती, असंवैधानिक एवं तानाशाही कृत्य है। अभाविप ने आज यहां कहा कि परिषद इस कृत्य को एक स्वस्थ छात्र संघ चुनाव के लिए धातक मानते हुए इसकी कड़ी निंदा करती है। अभाविप चुनाव समिति पर अविश्वास जताते हुए निष्पक्ष चुनाव के लिए जेएनयूएस्यू चुनाव समिति से बैलेट पेपर के छपने और प्रयोग करने की संख्या को सार्वजनिक करने की मांग करती है। उल्लेखनीय है कि आज सुबह लगभग

# सद्भाव का आश्वासन: धनखड़

नयी दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने गुरुवार को कहा कि युद्ध के लिए सदैव तैयार रहना शांति के लिए सबसे सुरक्षित मार्ग है और भारत का उदय वैश्विक शांति और सद्भाव के लिए एक आश्वासन है।

श्री धनखड़ ने आज यहां एक

उपराष्ट्रपति निवास पर अंतरराष्ट्रीय रणनीतिक सहभागिता कार्यक्रम (आईएन-स्टेप) के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि शांति को शक्ति से ही सुरक्षित रखा जा सकता है और युद्ध के लिए सदैव तैयार रहना शांति के लिए सबसे सुरक्षित मार्ग है। श्री धनखड़ ने कहा कि अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी में भारत का उदय विश्व शांति, सद्भाव और वैश्विक व्यवस्था के लिए सबसे बड़ा आशासन है। उन्होंने कहा कि भारत वैश्विक शांति, स्थिरता और सद्भाव को बनाए रखने और बनाए रखने के लिए समान विचारधारा वाले देशों को शामिल करने के लिए प्रतिबद्ध है। इन-स्टेप 21 देशों के अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों और आठ भारतीय अधिकारियों वाले इस दो सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारत आर्थिक विकास पर है और यह वृद्धि अंजेय है। उन्होंने कहा कि भारत की असाधारण विकास की कहानी है।

पाल दापक सप्तसना न दिया (धारणपत्र)  
एजेंसी

कमलनाथ ने विश्वास कर दायित्व दिया, जिसके लिए वे सदैव कंग्रेस के ऋणी रहेंगे। पत्र के अंत में श्री सक्सेना ने लिखा है कि वर्तमान में व्यक्तिगत परेशानियों के

और प्रभावी कृतीति और बढ़ती सौम्य शक्ति के कारण दुनिया शांति के लिए नकारात्मक परिवेश के लिए भारत की ओर दखल रही है। वैधिक शांति और सुशास्त्रों को वेकास के लिए अनिवार्य करार देते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि शांति की सबसे अच्छी स्थिति शक्ति है। युद्ध के लिए हमेशा नेतृयार रहना शांतिपूर्ण माहौल के लिए सबसे नुरक्षित मार्ग है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि दुनिया के किसी भी हिस्से में टकराव करने मंत्री दीपक सक्सेना ने आज कंग्रेस पार्टी से त्यागपत्र दे दिया।

छिंदवाडा जिले से विधायक रह चुके श्री सक्सेना ने प्रदेश कंग्रेस अध्यक्ष को संबोधित पत्र में पार्टी से त्यागपत्र देने की बात कही है। श्री सक्सेना ने इसी तरह का पत्र पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को भी लिखा है। दोनों ही पत्र सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं।

छिंदवाडा जिला निवासी श्री सक्सेना ने कारण कंग्रेस पार्टी की जवाबदारी निर्वहन नहीं कर पा रहे हैं, इसलिए वे कंग्रेस से त्यागपत्र दे रहे हैं। उन्होंने त्यागपत्र को स्वीकार करने का अनुरोध प्रदेश अध्यक्ष से किया है। इस बीच प्रदेश कंग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख के मिश्रा ने इस संबंध में नपे तुले शब्दों में यूनीवार्टी से कहा कि श्री सक्सेना के त्यागपत्र की सूचना उन्हें मीडिया के माध्यम से मिली है। दरअसल हाल ही में श्री कमलनाथ के एक अन्य

वाले देशों से परे वैश्विक अर्थव्यवस्था और आपूर्ति श्रृंखला पर इसका असर पड़ता है और ऐसे टकराव का समाधान कूटनीति और बातचीत में निहित है। उन्होंने कहा कि अलगाव का दृष्टिकोण अब अतीत की बात हो गई है। इस सभी राष्ट्रों को सार्थक चर्चा में जागरूक रामिल होने की आवश्यकता है। उन्होंने भावी नीति निर्णाण और संघर्ष समाधान के आधार के रूप में बातचीत और एकजुटता के काम करने पर जोर दिया।

प्रदेश अध्यक्ष को लिखे पत्र में कहा कि वे वर्ष 1974 से कांग्रेस के सदस्य रहे हैं। सात बार विधानसभा का चुनाव लड़ा और छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया है। इस तह के घटनाक्रमों के राजनीतिक गलियारों में अनेक मायने निकाले जा रहे हैं। श्री कमलनाथ छिंदवाड़ा संसदीय क्षेत्र का पर्याय माने जाते हैं और इस बार यहाँ से श्री कमलनाथ के पुत्र नकुलनाथ लगातार दूसरी बार चुनाव मैदान में कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में हैं।

विषय है। शर्मा ने संतुलित होनी चाहिए

भपमान माना जाएगा तो विराधियों को भी उन्हें कहा, कि हमें उन्होंने कहा, कि है कि जातिगत अखिरी जनगणना के शासन के दौरान फर द्वारा एससी और उन्हें जाति से संबंधित करने का एक सचेत उन्होंने कहा, ‘‘मेरे रामबाण हो सकती माप्त करने के लिए धन हो सकती है।’’ लल विषय पर लंबे से मौलिक विचलन निहतार्थ हैं। शर्मा वाली पार्टी के रूप मति के निर्माता के निः प्राप्त करने और निर्माण करने का एक विराधियों को भी उनका कहना था, “कांग्रेस ने पारदर्शिता, लोकतांत्रिक चर्चा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का समान करने में दृढ़ता से विश्वास किया है। मैं इस पत्र को उसी भावना से लिख रहा हूं।

## प्राण प्रतिष्ठा के बाद...

2,04,63,403 भारतीय एवं 28,331 विदेशी को मिलाकर कुल 2,04,91,724 श्रद्धालुओं ने अयोध्या में दर्शन किया। वर्ष 2020 में कोरोना के कारण श्रद्धालुओं की संख्या में कमी देखने को मिली और 61,93,537 भारतीय एवं 2,611 विदेशी मिलाकर कुल 61,96,148 श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे। वर्ष 2021 में 1,57,43,359 भारतीय एवं 431 विदेशी पर्यटकों ने अयोध्या में दर्शन पूजन किया। 2021 में कुल 1,57,43,790 श्रद्धालु अयोध्या दर्शन के लिए आए। इसी क्रम में वर्ष 2022 में 2,21,12,402 भारतीय एवं 26,403 विदेशी पर्यटक अयोध्या पहुंचे। कुल मिलाकर 2,21,38,805 श्रद्धालु 2022 में अयोध्या दर्शन के लिए यहां पहुंचे। वर्ष 2023 में यह संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है।

भारतीय श्रद्धालु व 8418 विदेशी श्रद्धालु शामिल रहे। माना जा रहा है कि वर्ष 2024 में अयोध्या अने वाले श्रद्धालुओं की संख्या इतनी तेजी से बढ़ी है कि 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के बाद से 20 मार्च के बीच 1 करोड़ 12 लाख श्रद्धालु रामलला का दर्शन कर चुके हैं। ऐसा नहीं है कि अयोध्या अने वाले भारतीय श्रद्धालुओं की ही संख्या में बढ़तेरी हुई है। राम लला का दर्शन करने के लिए यहां अने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। प्रभु श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद से यहां देश-विदेश से अने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। श्रद्धालुओं की बढ़ती भीड़ से अयोध्या में रोजी-रोजगार में भी तेजी से बढ़िया भी होने लगा है। पहले सूने रहने वाले दुकानों में अब ग्राहकों की भारी भीड़ देखने को मिल रही है। खान-पान, होटल-रेस्टोरेंट, सजावटी सामानों की दुकानों पर सेलानियों की भीड़ अब आम हो चली है। लोगों का मानना है कि 22 जनवरी को जबसे रामलला विराजमान हुए हैं, यहां देश भर से अने वाले श्रद्धालुओं व विदेशी पर्यटकों की संख्या में लगी है। अयोध्या को फोर लेन व सिक्स लेन सड़कों से जोड़ा जा रहा है। विश्वस्तरीय हवाई अड्डा व रेलवे स्टेशन का निर्माण किया गया है। इसके अलावा तमाम अन्य सुविधाएं भी अयोध्या में विकसित की जा रही हैं।

## कांग्रेस ने ‘मोदी की गारंटी’...

सहित विभिन्न मुख्य मुद्दों पर चुनाव आयोग के समने आपति दर्ज की है। 2-जी पर यह वीडियो पूरी तरह से अनुचित है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा रस्स-यूक्रेन युद्ध रुकवाने के फर्जी दावे वाले वीडियो, विज्ञापन में सेना का इस्तेमाल, मोदी की गारंटी जैसे विज्ञापन, भाजपा की राज्य इकाई द्वारा डाली गई आपत्तिजनक पोस्ट, प्रधानमंत्री ने दंड मोदी द्वारा धर्म और धर्मिक बातों का काटाक्ष के रूप में इस्तेमाल करना और संसद शोभा कांदलाजे का तमिलनाडु से जुड़ा बयान शामिल है। हमें उम्मीद है कि आयोग भ्रमित करने वाले विज्ञापन, फेक न्यूज और आचार सहितों के उल्लंघन पर कदम उठाएगा। देश में जगह-जगह सरकार के कामों के विज्ञापनों पर आपति जराई है क्योंकि ये सब प्रचार का द्विस्मा नहीं हो सकता है।

भारतीय स्टेट बैंक ने चुनावी...  
न्यायालय के 15 फरवरी 2024 और  
2024 के आदेशों के अनुसार कर चुनावी  
का ब्लोरा दो बंद बंद लिफाफों (लिफाफे  
लिफाफा 2) में प्रस्तुत किये जाने की जाए  
गयी है, ताकि आयोग इन्हें अपनी वेबसाइट  
अपलोड कर सके। पहले लिफाफे में  
सूचनाओं वाली पेन ड्राइव है, तथा दूसरे पेन  
पेन ड्राइव के पीडीएफ फाइल के पासवर्ड  
हैं। बैंक ने कहा है कि जब भी जरूरत हो,  
आयोग को यह हार्ड कॉम्पी के रूप में  
उल्लेखनीय है कि चुनावी चंदे में नक्की देने  
को रोकने के लिये संसद में पारित कानून  
चुनावी बांड की व्यवस्था शुरू की गई।  
एस्पीआई को इन बांडों बेचने और भुगतान  
दायित्व दिया गया था। बैंक इन बांडों को  
चुनिदा शाखाओं के माध्यम से बेचता और  
भुगतान करता आ रहा था। उच्चतम न्याय  
बांड को संविधान के तहत अधिव्यक्ति की  
के प्रावधान 19 (1) ए के प्रावधान और  
के अधिकार के कानून के खिलाफ करार

